आख्या

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
'भारतीय शैलचित्र कला में अनुसंधान'
3–4 मई 2019

आदि दृश्य विभाग
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
नई दिल्ली

भारत में शैलचित्र कला के प्रणेता तथा पितामह पद्मश्री डॉ० विष्णु श्रीधर वाकणकर जी के शताब्दी वर्ष पर इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के आदि दृश्य विभाग द्वारा दिनांक 2–4 मई 2019 तक 'भारतीय शैलचित्र कला में अनुसंधान' विषय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन इ० गाँ० रा० क० के० के मेस भवन के व्याख्यान कक्ष में किया गया। संगोष्ठी में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, संस्थाओं आदि से आमंत्रित विद्वतजनों की उपस्थिति रही जिनके द्वारा भारतीय शैलचित्र के विविध आयामों पर शोधपत्रों का वाचन किया गया।

संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० नागेश्वर राव जी रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सचिव डॉ० सच्चिदानंद जोशी जी ने किया तथा कार्यक्रम की आधार व्याख्यानकर्ता राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण, नई दिल्ली की पूर्व अध्यक्ष डॉ0 सुस्मिता पाण्डे जी रही। साथ ही सम्मानीय बाबा योगेंद्र जी की भी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का प्रारम्भ आदि दृश्य विभाग के परियोजना निदेशक डॉ० बंशी लाल मल्ला जी ने अपने स्वागत उद्बोधन से किया तथा संगोष्ठी के विषय में संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ समस्त गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। तत्पश्चात कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ0 सच्चिदानंद जोशी जी ने मुख्य अतिथि डॉ0 नागेश्वर राव एवं आधारव्याख्यानकर्ता डॉ0 सुस्मिता पाण्डे जी को स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्र भेंट कर अभिनन्दन किया। संगोष्ठी से सम्बंधित विवरण पुस्तिका (Brochure) का विमोचन मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया।

(1) गणमान्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन; **(2, एवं 3)** डॉ0 सुस्मिता पाण्डे जी एवं डॉ0 नागेश्वर राव जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए डॉ0 सच्चिदानंद जोशी जी ; **(4)** मंचासीन अतिथियों द्वारा संगोष्ठी विवरण पुस्तिका का विमोचन

डॉ0 सुस्मिता पाण्डे जी ने संगोष्ठी से सम्बंधित 'रॉक आर्ट रिसर्च इन इण्डिया (एन ओवरविउ ऑफ रॉक आर्ट एण्ड इट्स कॉनसेस्न्स)' विषय पर आधार व्याख्यान का वाचन किया जिसमे शैलचित्र कला के विभिन्न आयामों का यथोचित् रूप से समावेश कर उनकी उपयोगिता पर समीक्षात्मक प्रकाश डाला। इसके पश्चात् कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ0 नागेश्वर राव जी ने डॉ0 वाकणकर के जीवन से सम्बंधित कुछ स्मरणातीत् अंशों एवं उनके योगदानों के विषय में विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ० सच्चिदानंद जोशी जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में भारतीय संस्कृति के विविध पक्षों पर डॉ० वाकणकर जी द्वारा किये गए महत्त्वपूर्ण कार्यों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला साथ ही शैलचित्र कला विषय को विभिन्न संस्थानों, विश्वविद्यालयों आदि में किस प्रकार एक पृथक विषय के रूप के प्रस्तुत किया जाए तथा अधिकतम संख्या में युवाओं की इसमें सहभागिता पर अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किये। अंत में डॉ0 बंशी लाल मल्ला जी ने उद्घाटन समारोह में उपस्थित समस्त विद्वतजनों एवं अतिथियों को पुनः सहृदय धन्यवाद ज्ञापित किया।

डॉ० सुस्मिता पाण्डे जी द्वारा आधार व्याख्यान प्रस्तुती

डॉ0 नागेश्वर राव जी अतिथि वक्तव्य

डॉ0 सच्चिदानंद जोशी जी द्वारा अध्यक्षीय उद्बोधन

डॉ0 बंशी लाल मल्ला जी धन्यवाद ज्ञापन

प्रथम सत्र (2 मई 2019, मध्यान्ह 02:00)

संगोष्ठी के प्रथम शैक्षिक सत्र का प्रारम्भ दिनांक 2 मई 2019 को मध्यान्ह 02:00 बजे हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ0 बी0 एम0 पाण्डेय जी ने किया। सत्र में कुल 5 शोधपत्रों का वाचन किया गया जिसमें प्रथम शोधपत्र 'रिमेम्बरिंग आंद्रे लेरोई–गौरहनः द साउथ एशियन रॉक ड्राइंग' का वाचन

डॉ0 माहेश्वर पी0 जोशी जी ने किया। दूसरा शोधपत्र डॉ0 पार्थ चौहान जी ने 'ए पैन–इण्डिया पर्सपेक्टिव ऑन रॉक आर्ट फ्रॉम ए कम्पाइलेशन ऑफ >1000 पब्लिश्ड साईट' शीर्षक के माध्यम से प्रस्तुत किया जिसमें भारत के विभिन्न क्षेत्रों से अभी तक प्राप्त 1000 से अधिक शैलचित्र स्थलों के विषय, तकनीक, आच्छादन माप आदि के बारे में जानकारी प्रदान की गई। डॉ0 सदाशिव प्रधान जी ने सत्र का तृतीया शोधपत्र 'सिम्बोलिज्म इन रॉक आर्टः एन एथनोऑर्कियोलोजिकल पर्सपेक्टिव फॉर इंटरपिटेशन ऑफ सिम्बल्स एण्ड मोटिफ्स इन ओडिशा रॉक आर्ट' को प्रस्तुत किया जिसमे ओडिशा के शैलचित्र कला में अंकित विविध ज्यामितीय आकृतियों, प्रतीकों एवं कप मार्क्स को स्थानीय आदिम जनजाति लंजिया सौरा के विभिन्न सामाजिक, धार्मिक व अनुष्ठानिक क्रियाकलापों के समय बनाये जाने वाले भित्ति चित्रों, अंकनों आदि के साथ समेकित कर शैलचित्रों के वास्तविक सन्दर्भ को समीक्षात्मक रूप से व्याख्यायित किया। सत्र के चतुर्थ शोधपत्र 'रॉक आर्ट एण्ड अस्ट्रोनॉमीः द मिसिंग लिंक' के माध्यम से डा0 मयंक वाहिया जी द्वारा शैलकला में अंकित सकेन्द्रित वृत्त, सूर्य, पशु अंकन, सिक्कों पर अंकित चिन्हों आदि का खगोलशास्त्रीय विषयवस्तुओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किसा गया। प्रथम सत्र के अंतिम शोध पत्र का वाचन डॉ0 रविकोरिसेट्टार द्वारा 'पैटर्न इन द जियोग्राफिकल डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ रॉक आर्ट साईट इन इण्डिया' शीर्षक के माध्यम से किया गया जिसमें भारत के अलग–2 क्षेत्रों में भौगोलिक परिदृश्य के आधार पर वहाँ के शैलचित्रों के प्रतिरूपों को प्रस्तुत किया।

(1) सत्र अध्यक्षता, डॉ0 बी0 एम0 पाण्डे; **(2, 3, 4, 5 एवं 6)** शोधपत्र प्रस्तुती क्रमशः डॉ0 माहेश्वर पी0 जोशी, डॉ0 पार्थ चौहान (दाएं से प्रथम), डॉ0 सदाशिव प्रधान, डॉ0 मयंक वाहिया (दाएं) तथा डॉ0 रविकोरिसेट्टार जी

द्वितीय सत्र (3 मई 2019, प्रातः 10:30)

संगोष्ठी का द्वितीय सत्र दिनाँक 03 मई 2019 को प्रातः 10:30 पर प्रारम्भ हुआ। सत्र की अध्यक्षता डॉ0 कोरिसेट्टार जी ने किया। सत्र में कुल 5 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। प्रथम शोध पत्र डॉ0 रिजा अब्बास द्वारा 'अब्सट्रैक्ट एण्ड जिऑमेट्रिक सिम्बॉलिशिम इन इण्डियन रॉक आर्टः ए रिसेसमेन्ट' शीर्षक से किया गया। जिसके माध्यम से शैलचित्र में अंकित विभिन्न ज्यातिमीय आकृतियों व डिजाइनों को वर्तमान में प्रचलित वस्तुओं एवं जीव–जन्तुओं पर बनी ज्यामितीय आकृतियों से समेकित कर अध्ययन करने का प्रयास किया गया। सत्र के द्वितीय शोधपत्र का वचन डॉ0 वी0 सेल्वाकुमार द्वारा केरल के शैलकला में चित्रित व उत्कीर्णित तांत्रिक, मुखौटादार अंकनों आदि का वर्तमान में उन क्षेत्रों में प्रचलित जनजातीय नृत्यों जैसे नालका, तुलु, परावा नृत्य, मलायन नृत्य आदि के साथ तुलनात्मक रूप से नृजातीय अध्ययन को 'रॉक आर्ट लिटरेचर एण्ड लिविंग ट्रेडिशन इन इण्डिया' नामक शीर्षक से प्रस्तुत किया। तृतीय शोधपत्र 'द रॉक ऑफ सेंट्रल इंडिया एण्ड अवेयरनेस इन द यंग स्टूडेंट एण्ड आर्कियोलॉजी' का प्रस्तुतीकरण डॉ0 नारायण व्यास जी द्वारा किया गया। जिसके माध्यम से भोपाल एवं उसके आस–पास के शैलचित्र युक्त स्थलों पर विभिन्न राष्ट्रीय व स्थानीय संस्थानों के सहयोग से संपन्न हुए कार्यशालाओं, व्याख्यानों आदि द्वारा कैसे युवाओं को शैलचित्र कला विषय से जोड़ने का प्रयास चल रहा है इस पर प्रकाश डाला गया। सत्र का चतुर्थ शोधपत्र का वाचन डॉ0 प्रभास साहू जी ने 'पेट्रोग्लिफ इन द रॉक आर्ट शेल्टर ऑफ गविलगढ़ हिल एण्ड ओडिशा' शीर्षक से किया जिसमें महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश के सीमा पर स्थित गविलगढ़ हिल एवं उड़ीसा के शैलोत्कीर्ण चित्रों के विवध विषयों पर प्रकाश डाला गया। सत्र का अंतिम शोधपत्र 'साइंटफिक कैरेक्टराइजेशन ऑफ पिग्मेंट यूज्ड फॉर पेंटिंग्स इन रॉक आर्ट ऑफ सोनभद्र एण्ड मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश 'के द्वारा डॉ0 चंद्र मोहन नौटियाल जी ने सोनभद्र तथा मिर्जापुर के शैलचित्र स्थलों व चित्रांकन हेतु प्रयुक्त विभिन्न रंगों का वैज्ञानिक परीक्षण कर उनके अंकन की विधि, प्रयुक्त सामग्री आदि महत्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश डाला तथा चित्रों के कालक्रम को निर्धारित करने वाली विभिन्न तकनीकों के विषय में अवगत कराया।

(1) सत्र अध्यक्षता, डॉ0 रविकोरिसेट्टार जी (मध्य में); **(2, 3, 4, 5 एवं 6)** शोधपत्र प्रस्तुती क्रमशः डॉ0 रिजा अब्बास , डॉ0 वी0 सेल्वाकुमार, डॉ0 नारायण व्यास, डॉ0 प्रभास साहू तथा डॉ0 चंद्र मोहन नौटियाल जी (दाएं से प्रथम)

तृतीय सत्र (3 मई 2019, मध्यान्ह 02:00)

संगोष्ठी का तृतीय सत्र मध्यान्ह 02:00 बजे प्रारम्भ हुआ। सत्र की अध्यक्षता डॉ0 अजित कुमार जी ने की। सत्र में कुल 3 शोधपत्रों का वाचन किया गया। सत्र का पहला शोधपत्र डॉ0 एस0 के0 द्विवेदी द्वारा 'पेंटेड रॉक शेल्टर अराउंड ग्वालियर' शीर्षक के माध्यम से ग्वालियर जिले के 60 किमी0 के परिक्षेत्र से प्राप्त शैलचित्र युक्त स्थलों, जैसे– गुप्तेश्वर, मद्दाखोह, मोहना, टिकला, बहु साहिब की समाधि आदि में चित्रित वैविध्यपूर्ण विषयों के बारे में जानकारी प्रदान किए। दूसरे शोधपत्र की प्रस्तुति डॉ0 गंगानाथ झा द्वारा 'द रॉक आर्ट ऑफ हजारीबागः एथनोआर्कियोलॉजी एनालिसिस (स्पेशल रेफेरेंस टू लिखानी एण्ड इशको रॉक शेल्टर)' से किया गया जिसके अंतर्गत अध्येयता ने हजारीबाग के लिखानी एवं इशको शैलाश्रयों से प्राप्त विभिन्न चित्रांकनों को वर्तमान में इस क्षेत्र में निवास करने वाली आदिम जनजातियों, यथा– संथाल, मुंडा, ओरान द्वारा बनाई जाने वाली कोहवर एवं सोहराई भित्ति चित्रों के साथ समेकित कर नृजातीय पुरातात्त्विक अध्ययन द्वारा नवीन तथ्यों पर प्रकाश डाला गया। सत्र का अंतिम शोधपत्र 'रॉक आर्ट ऑफ खोपुम एरिया' डॉ0 पी0 बिनोदिनी देवी द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर के खोपुम क्षेत्र के शैलोत्कीर्ण एवं शिलापट्ट पर उत्कीर्ण विविध विषयों जैसे पदचिन्ह, पशुशीर्ष, स्त्री–पुरुष जननांगों, ज्यामितीय आकृतियों आदि का विवरण प्रस्तुत किया, इसके अतिरिक्त सम्बंधित क्षेत्र के आदिवासियों द्वारा वर्तमान में भी इस प्रकार के अंकनों को बनाने के सांस्कृतिक व धार्मिक कारणों को भी व्याख्यायित किया, मुख्यतः अंतिम संस्कार के समय महाश्मीय समाधियों को बनाने के सन्दर्भ में।

(1) सत्र अध्यक्षता, डॉ0 अजित कुमार जी (बांए से प्रथम) ; **(2, 3, एवं 4)** शोधपत्र प्रस्तुती क्रमशः डॉ0 एस0 के0 द्विवेदी, डॉ0 गंगानाथ झा, तथा डॉ0 पी0 बिनोदिनी देवी जी

सितारवादन कार्यक्रम

वाकणकर जी के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित इस संगोष्ठी के द्वितीय दिवस दिनांक 03 मई 2019 की सांयकालीन बेला पर वाकणकर जी प्रथम शिष्य श्री सच्चिदा नागदेव की सुपुत्री सुश्री स्मिता नागदेव जी द्वारा सभागार भवन में सितारवादन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में इ० गाँ० रा० क० के० के माननीय सदस्य सचिव डॉ० सच्चिदानंद जोशी जी, आदि दृश्य विभाग के परियोजना निदेशक डॉ० बंशी लाल मल्ला जी एवं संगोष्ठी में आमंत्रित समस्त विद्वतजन, विभिन्न संस्थाओं से पधारे अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

सुश्री स्मिता नागदेव जी द्वारा सितारवादन प्रस्तुति

सभागार में उपस्थित अतिथिजन

चतुर्थ सत्र (4 मई 2019, प्रातः 10:30)

संगोष्ठी का चौथा एवं अंतिम सत्र 4 मई 2019 को प्रातः 10:00 बजे से व्याख्यान कक्ष में प्रारम्भ हुआ। सत्र की अध्यक्षता डॉ0 एस0 के0 द्विवेदी जी द्वारा की गयी। इस अंतिम सत्र में कुल 6 शोधपत्रों का प्रस्तुतीकरण हुआ। प्रथम शोधपत्र का वाचन डॉ0 कान्ती कुमार पवार द्वारा 'पॉसिबल इंटरपिटेशन अबाउट द ओकरेन्स ऑफ पेट्रोग्लिफ इन विदर्भ रीजन ऑफ महाराष्ट्र' शीर्षक से किया गया, जिसमें महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के पूर्वी भाग में दक्कन और मध्य भारत के बलुआ प्रस्तर की पहाड़ियों के बसाल्ट जमाव वाले भूगर्भीय क्षेत्र से प्राप्त शैलोत्कीर्ण अंकनों पर प्रकाश डाला गया। सत्र का द्वितीय शोधपत्र 'रॉक आर्ट रिसर्च इन नॉर्थईस्ट इण्डिया एण्ड रिसेंट डिस्कवरी ऑफ नॉन–फिगरेटिव ग्रूव्स लाइन इन नियोलिथिक कंटेंट' का प्रस्तुतीकरण डॉ० तिलोक ठाकुरिया द्वारा किया गया, जिसके माध्यम से पूर्वोत्तर भारत के नवपाषाणिक संस्कृति एवं इस क्षेत्र में अतीत व वर्तमान में महाश्मीय शिलापट्टों पर हो रहे उत्कीर्णन विषयों पर नृजातीय अध्ययन द्वारा सम्बंधित पक्षों का मूल्यांकन किया गया। तृतीय शोधपत्र 'ईस्टर्न इण्डिया रॉक आर्ट साइट एण्ड सेक्रेड रिचुअलिस्टिक स्पेसः विद स्पेशल रेफेरेंस टू साउदर्न बिहार एण्ड एडज्वाइनिंग झारखण्ड' का वाचन डॉ0 अवध किशोर प्रसाद द्वारा किया गया। शोधपत्र में अध्येयता ने पूर्वी भारत की शैलकला, मुख्यतः बिहार और झारखण्ड के विविध विषय वस्तुओं जैसे प्रतीक चिन्ह, ज्यामितीय चिन्ह, कर्मकाण्डीय प्रतिकांकनों आदि का नृजातीय अध्ययन प्रस्तुत किया गया। चतुर्थ शोधपत्र का वाचन डॉ0 द्विपेन बेजबेउरा द्वारा 'डिकोडिंग द इनग्रेंड मोटिफ्स एण्ड फिगर्स ऑफ असम एण्ड एडज्वायनिंग एरिया' शीर्षक के माध्यम से किया गया। प्रस्तुत शोधपत्र द्वारा असम के ब्रह्मपुत्र घाटी और समीपवर्ती राज्य के क्षेत्र मणिपुर का थारोन और मिजोरम के चम्पई जिले के क्षेत्रों से प्राप्त उत्कीर्ण चित्रों पर प्रकाश डाला गया। इसके अतिरिक्त अध्ययन क्षेत्र में बुद्धवाद तथा शैववाद के सह–अस्तित्त्व वाले विशिष्ट अंकनों, प्रकृति व सामुदायिक मान्यताओं के प्रतीकों की भी व्याख्या की गयी। पाँचवे शोधपत्र के अंतर्गत केरल राज्य के शैलकला (एतकुदुक्कल, बेंगलम, इरिकुलम, कपिकुन्नू, एडकल) में प्राप्त होने वाले अंकनों, उनके संभावित अर्थ तथा कालावधि सम्बन्धी तथ्यों का मूल्यांकन डॉ0 अजीत कुमार द्वारा 'रॉक आर्ट ऑफ केरलः कॉन्कर्ड एण्ड कंटेशन्स' शीर्षक के माध्यम से किया गया। सत्र व संगोष्ठी का अंतिम शोधपत्र का वाचन डॉ0 जेनी पीटर द्वारा 'पारादिगम शिफ्ट इन रॉक आर्ट रिसर्च फॉलोविंग द डिस्कवरी ऑफ भीमबेटका एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन साउथ इण्डियन रॉक आर्ट' शीर्षक से किया गया, जिसमे भारत मे शैलकला के इतिहास, डॉ0 वाकणकर द्वारा भीमबेटका की खोज के विषय में विवरण प्रस्तुत किया गया साथ ही दक्षिण में मध्यभारत के शैलचित्रों का कैसा प्रभाव व उनमे क्या प्रमुख बदलाव दृष्टित होते है इस पर भी प्रकाश डाला गया।

(1) सत्र अध्यक्षता, डॉ0 एस0 के0 द्विवेदी (मध्य में); **(2, 3, 4, 5 एवं 6)** शोधपत्र प्रस्तुती क्रमशः डॉ0 कान्ती पवार, डॉ0 तिलोक ठाकुरिया, डॉ0 ए0 के0 प्रसाद, डॉ द्विपेन बेजबेउरा, डॉ0 अजित कुमार तथा डॉ0 जेनी पीटर (दाएं से प्रथम)

इस आयोजित त्रिदिवसीय संगोष्ठी के 4 सत्रों में कुल 19 शोधपत्रों का वाचन किया गया। प्रत्येक शोधपत्र के पश्चात् उपस्थित विद्वतजनों द्वारा सम्बंधित विषय पर महत्त्वपूर्ण परिचर्चा हुई। साथ ही प्रत्येक सत्र के अंत में अध्यक्ष द्वारा सभी शोधपत्रों का समाहार प्रस्तुत किए गया।

संगोष्ठी का समापन सत्र अपरान्ह 03:30 बजे से प्रारम्भ हुआ जिसमे समस्त आमंत्रित विद्वतजनों की उपस्थिति रही। सत्र की अध्यक्षता डॉ0 सदाशिव प्रधान जी ने किया। इस सत्र में संगोष्ठी से सम्बंधित तथा भविष्य में अन्य किस प्रकार के कार्यक्रमों द्वारा शैलकला विषय को उत्कृष्ट बनाया जाए इस पर व्यापक चर्चा हुई जिससे सम्बंधित कार्यवृत्त अंशतः निम्न प्रकार से है –

- शैलचित्र पर लघुसमयावधि वाले कोर्स तथा शोध कार्य करायें जाए जिनमें विज्ञान व व्यावसायिक विषयों को भी समायोजित किया जाए। इसके अतिरिक्त युवाओं की अधिकतम सहभागिता हेतु प्रोत्साहन राशि के रूप में छात्रवृत्ति व पुरस्कार भी प्रदान किया जाए।
- इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र द्वारा विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं के सह–सहयोग से देश के विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं व प्रदर्शनियों का आयोजन किए जाये।
- भारत, यूरोप व अफ्रीका के शैलचित्रों पर एक अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन किया जाए।
- शैलकला विषय से सम्बंधित नृजातीय पुरातात्त्विक अध्ययन को प्रोत्साहन दिया जाए जिसमे महाश्मीय संस्कृति से सम्बंधित शैलोत्कीर्ण अंकनों का भी अध्ययन किया जाए।
- शैलकला वाले पुरास्थलों पर कार्यशाला एवं जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन स्थानीय संस्थाओं के साथ मिलकर किया जाना चाहिए जिससे उसकी उपयोगिता व महत्त्व को आम जनमानस के समक्ष प्रस्तुत कर सके।
- शैलकला विषय पर एक विश्वस्तरीय वार्षिक या अर्धवार्षिक शोधपत्रिका का प्रकाशन किया जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त डॉ0 वाकणकर जी द्वारा प्रकाशित की जाने वाली शोधपत्रिका 'शैल चित्र' पत्रिका का पुनः प्रकाशन प्रारम्भ किया जाए।
- शैलकला से सम्बंधित व्यवस्थित अभिलेखन पद्धति का विकास किया जाए तथा सम्बंधित सामग्री के सन्दर्भों को ऑनलाइन अपलोड किया जाए ताकि शोधार्थियों, छात्रों व अन्य जिज्ञासु लोगों को सहजरूप से इसकी उपलब्धता हो सके।
- शैलचित्र के कालानुक्रम निर्धारण से सम्बंधित वैज्ञानिक पद्धतियों को अध्ययन में सम्मिलित किया जाए जिसके लिए विशेषज्ञों की टीम के सहयोग से समय–समय पर प्रशिक्षण कार्यशालों का आयोजन किये जाना चाहिए। साथ ही इन अंकनों की भौतिक व शैलीगत विशिष्टाओं का भी अध्ययन किया जाए।
- विश्वविद्यालयों एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों में शैलचित्र कला को विषय के रूप में सम्मिलित किया जाए।

- पुरातत्त्व, वन विभाग तथा पर्यटन विभाग के सामंजस्य से शैलकला केंद्रों पर 'इको टूरिज्म' (Eco & Tourism) केंद्रों की स्थापना की जाए। इसके अतिरिक्त इन केंद्रों पर 'हेरिटेज–वॉक' (Heritage Walk) करवाए जाए।
- शैलचित्र कला में उत्त्कृष्ट कार्य करने विद्वानों को पुरस्कृत व सम्मानित किया जाए।

अंततः आदि दृश्य विभाग के परियोजना निदेशक डॉ0 बंशी लाल मल्ला जी द्वारा आमंत्रित विद्वतजनों को धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र व संगोष्ठी का सफलतापूर्वक समापन हुआ।

*****